

प्रथम दिवस आवरण First Day Cover



ग़दर आन्दोलन शताब्दी
GHADAR MOVEMENT CENTENARY



नई दिल्ली 110001 NEW DELHI

Ghadar Movement Centenary

The Ghadar Movement constitutes an important milestone in the history of India's struggle for freedom. The word Ghadar means mutiny. The movement aimed at bringing about a revolution in India in order to secure liberation from the British rule. Organised in USA (Astoria, Oregon) in the year 1913, the headquarter of the Ghadar Party was established in San Francisco.

The birth of such a movement in America was a result of an exceptional coming together of a number of Indian revolutionaries in exile and a large number of migrant Punjabi Sikh farmers and workers. The contact with the outside world and exposure to new ideas opened their minds. They started understanding the meaning of freedom and reasons of the poverty and exploitation under colonial domination. They dreamt of complete independence of India and worked towards instilling patriotic feelings in young Indians and train them for a rising in India. A distinguishing feature of this movement was its inclusive character; it shed parochialism and transcended the boundaries of caste, religion and region.

The name of the movement came from the weekly newspaper named Ghadar which was published first in Urdu then in English, Hindi, Gujrati, Gurmukhi and Pushtu and circulated free of charge among Indians settled in different parts of the world. The declaration made by the paper Ghadar in its first issue of November 1, 1913, was categorical and audacious: "Today there begins in foreign lands, but in the language of the country, a war against the English rule in India". The founding editor of this paper was the reputed intellectual and revolutionary, Lala Hardayal. With Sohan Singh Bhakna as the President, Hardayal was also the first secretary of the Ghadar Party. Other prominent leaders of the Ghadar party were Taraknath Das, Mohammed Barkatullah, Rash Bihari Bose and Vishnu Ganesh Pingley.

The objective of preparing for the freedom of India

crystallised during a series of Hardayal's meetings and discussions with leading members of the Punjabi community like Jwala Singh, Bhakna, Kanshi Ram, Sarabha, Gobind Behari Lal and others in California and around Portland and Astoria. The group felt that those who were not free in their own countries could not hope for respect in foreign lands. The group felt that Liberation from British rule was possible only through an armed struggle.

The Canadian government's cruel treatment of the Indian passengers of steamship Komagata Maru and the sudden eruption of the war between Germany and England upset their plans. When, after two months long legal battle and appeals to British authorities, the 376 passengers were not allowed to land in Canada and the ship was forced to return to Calcutta in India, the Indian community in North America was livid with rage. Ghadar Party planned a Pan-Indian mutiny in the British Indian Army, from Punjab to Singapore, in February 1915 to overthrow the British Raj in the Indian subcontinent. The mutiny was ultimately thwarted as the British Indian intelligence successfully infiltrated the Ghadar movement. Despite the fact that Ghadar movement could not achieve its objective of freedom from British Raj, the impact of Ghadar movement was phenomenal.

The Ghadar Memorial, now under the charge of the Consul-General of India at San Francisco, continues to remind Indians of the valiant efforts of the Ghadarites.

Department of Posts is happy to issue a Commemorative Postage Stamp on the Ghadar Movement Centenary.

Credits:-

Text : Based on the material provided by the proponent.

Stamp/FDC/
Brochure/
Cancellation : Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India



ग़दर आन्दोलन शताब्दी
GHADAR MOVEMENT CENTENARY

विवरणिका BROCHURE

गदर आंदोलन की शताब्दी

गदर आंदोलन का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। गदर शब्द का अर्थ है, विद्रोह। इस आंदोलन का मकसद था ब्रिटिश हुकूमत से आजादी हासिल करने के लिए भारत में क्रांति लाना। गदर पार्टी का संगठन संयुक्त राज्य अमेरिका(एस्टोरिया, ऑरेगॉन) में वर्ष 1913 में हुआ और इसका मुख्यालय सैन फ्रांसिस्को में स्थापित किया गया।

अमेरिका में इस प्रकार के आंदोलन का जन्म, बड़ी संख्या में निर्वासित भारतीय क्रांतिकारियों तथा प्रवासी पंजाबी सिक्ख किसानों और मजदूरों के एकजुट होने के परिणामस्वरूप हुआ। बाहरी दुनिया से संपर्क और नए विचारों से परिचय के कारण उनके मानस क्षितिज का विस्तार हुआ। वे स्वतंत्रता का अर्थ और साम्राज्यवादी हुकूमत के तहत गरीबी और शोषण का अर्थ समझने लगे। उन्होंने भारत की पूर्ण स्वतंत्रता का स्वप्न संजोया और युवा भारतीयों में देश भक्ति की भावना जागृत करने लगे और उन्हें भारत में विद्रोह के लिए तैयार करने लगे। इस आंदोलन की एक मुख्य विशेषता थी कि यह सर्वसमावेशी स्वरूप का आंदोलन था और इसने संकीर्णता को छोड़ जाति, धर्म और क्षेत्र की सीमाओं के पार जाते हुए सभी को शामिल किया।

इस आंदोलन का नाम गदर नामक एक साप्ताहिक समाचार-पत्र पर आधारित था, जो पहले उर्दू में और बाद में अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती, गुरुमुखी और पश्तो में प्रकाशित होता था और विश्व के विभिन्न हिस्सों में बसे भारतीयों में निःशुल्क परिचालित किया जाता था। 1 नवंबर, 1913 को प्रकाशित गदर समाचार-पत्र के पहले अंक में किया गया ऐलान स्पष्ट और ओजपूर्ण था : "आज, विदेशी जमीन पर परंतु देश की भाषा में, भारत में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ जंग की शुरुआत हुई है"। प्रतिष्ठित बुद्धिजीवी तथा क्रांतिकारी लाला हरदयाल इस समाचार-पत्र के संस्थापक संपादक थे। सोहन सिंह भाकना की अध्यक्षता में लाला हरदयाल गदर पार्टी के पहले सचिव भी थे। गदर पार्टी के अन्य प्रमुख नेताओं में तारकनाथ दास, मुहम्मद बरकतउल्लाह, रास बिहारी बोस और विष्णु गणेश पिंगले शामिल थे।

पंजाबी समुदाय के प्रमुख सदस्यों जैसे ज्वाला सिंह, भाकना, काशीराम, सराभा, गोविंद बिहारी लाल और अन्यो के साथ लाला हरदयाल

की कैलिफोर्निया तथा पोर्टलैंड और एस्टोरिया के आस-पास के क्षेत्रों में हुई बैठकों में विचार-विमर्श के दौरान भारत को आजादी दिलाने के लिए तैयारी के उद्देश्य ने मूर्त रूप लिया। इस समूह की धारणा थी कि जो लोग अपने ही देश में आजाद नहीं थे उन्हें विदेशों में आदर पाने की उम्मीद भी नहीं रखनी चाहिए। इस समूह का मानना था कि ब्रिटिश हुकूमत से आजादी केवल सशस्त्र संघर्ष के जरिए ही संभव थी।

कोमागाटा मारु जहाज पर भारतीय यात्रियों के साथ कनाडा सरकार के निर्मम व्यवहार और जर्मनी तथा इंग्लैंड के बीच अचानक छिड़े युद्ध ने इनकी योजना को विफल कर दिया। दो महीनेलंबी कानूनी लड़ाई और ब्रिटिश प्राधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत अपीलों के उपरांत इस जहाज के 376 यात्रियों को कनाडा में आने की अनुमति प्रदान नहीं की गई और इस जहाज को भारत में कोलकाता लौट जाने को मजबूर कर दिया गया। इस घटना से उत्तरी अमरीका में भारतीय समुदाय का खून खौल उठा। गदर पार्टी ने भारतीय उप महाद्वीप में ब्रिटिश राज का तख्तापलट करने के लिए फरवरी 1915 में पंजाब से सिंगापुर तक ब्रिटिश भारतीय सेना में अखिल भारतीय विद्रोह की योजना बनाई। परंतु, अंततः इस विद्रोह को दबा दिया गया क्योंकि ब्रिटिश भारतीय खुफिया तंत्र ने गदर आंदोलन में सफलतापूर्वक सेंध लगा दी थी। गदर आंदोलन ब्रिटिश राज से आजादी के अपने मकसद को भले ही हासिल न पर पाया हो परंतु इसके बावजूद इसका प्रभाव काफी गहरा था।

सैन फ्रांसिस्को स्थित गदर स्मारक, जोकि अब भारत के महाकॉन्सल के नियंत्रणाधीन है, आज भी भारतीयों को गदर आंदोलन के क्रांतिकारियों के साहस की याद दिलाता है।

डाक विभाग गदर आंदोलन की शताब्दी पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित।

डाक-टिकट / प्रथम

दिवस आवरण / सूचना

विवरणिका / विरूपण : अलका शर्मा



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख : 08 जनवरी, 2013
Date of Issue : 08 January, 2013

मूल्यवर्ग : 500 पैसा
Denomination : 500 p

मुद्रित डाक-टिकटें : 4.1 लाख*
Stamps Printed : 0.41 Million*

मुद्रण प्रक्रिया : वेट ऑफसेट
Printing Process : Wet Offset

मुद्रक : भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक
Printer : India Security Press, Nashik

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure reserved with the Department.

* 1 लाख प्रस्तावक हेतु।

*0.1 million for the proponent